प्रवचन

परमहंस श्री हंसानंद जी सरस्वती दण्डी स्वामी जी

विषय तालिका

CD # 43 * APR2011 *

SN	Title	Min	Coding	Contents	
1	01.mp3	33	⊕ ⊕ ⊕	**सृष्टि के आदि में सर्वप्रथम ओंकार का प्रादुर्भाव हुआ**, उत्पत्ति के पहले वह ब्रह्म में ही समाया था । ओंकार का सभी स्वर - व्यंजन एवं ३गुण, ब्रह्मा विष्णु महेष, ३अवस्थाऐं, ३शरीर ५कोष में विस्तार एवं व्याकरण। ओंकार भगवान का सर्वश्रेष्ठ नाम है जो **इदं** पद से संसार व **तद्** पद से ब्रह्म को बताता है फिर उसी में लीन हो जाता है । ओंकार का स्वरूप निरूपण एवं महिमा	Smp
2	02.mp3	35	⊕ ⊕	**पाँच माताओं** के अनुग्रह एवं कृपा से ही जीव का कल्याण है, पाँच माताऐं :- १ जननी २ पृथ्वी ३ गऊ ४ गंगा ५ वेदमाता	
3	03.mp3	35	⊕ ⊕ ⊕	**सामवेद/छा०उ०/६ठाअ० ::उद्दालक ऋषि का श्वेतकेतु से प्रश्न एवं उपदेश ::** क्या तुमने वह विद्या पढ़ी है जिसे जान लेने से सब कुछ जान लिया जाता है कुछ जानना बाकी नहीं रह जाता, अविज्ञात विज्ञात, अनसुना सुना, अनदेखा देखा हुआ हो जाता है ? जैसे माटी के पिण्ड के ज्ञान से माटी के सारे संसार के घट-मठ जान लिये जाने हैं क्योंकि माटी ही सत्य है शेष तो नामरूप वाणी का विकार मात्र है, कल्पित की निवृत्ति सत्य में ही होती है, सृष्टि के आदि में केवल सच्चि० ब्रह्म ही था जगत ब्रह्म में कल्पना मात्र है, अन्त में एक ब्रह्म ही शेष रहता है -श्वेतकेतु तत्त्वमसि, 'ब्रह्म सत्यं जगत मिथ्या जीवौ ब्रह्मैव न परा'	विशेष १
4	04.mp3	29	⊕ ⊕ ⊕	**सामवेद/छा०उ०/७तवाँ अ० ::नारद-सनतकुमार सम्वाद ::** नारद बोले हे प्रभु! मुझे ज्ञान दो इसपर सनतकुमार ने पूछा कि तुमने कितना अध्ययन किया है पहले वह बताओ, उसके आगे हम बताएगें, **नारद द्वारा अपने विद्याध्ययन का सविस्तार वर्णन**, **भूमातत्त्व का उपदेश**::: हे नारद जहाँ इ०म०बु०प्राण नहीं जा सकते पर जो इन्हें जानता है वह भूमा है वही महान व सुखरूप है	विशेष २
5	05.mp3	31	⊕ ⊕	**तैत्तीय उ०:: भगवान का स्वरूप निरूपण** :: 'सत्यं ज्ञानं अनंतं ब्रह्म' :: उत्पत्ति नाश रहित को 'सत्' कहते हैं जो इनों काल में **'है'**, वह एक समान रहने वाला अनंत अखंड 'ज्ञान' है, वह आदि अंत रहित **'आनंद'** सिन्धु है, इस प्रकार भगवान का स्वरूप द्रष्टा साक्षी 'सच्चिदानंद' है । वही जा०स्व०सु० को प्रकाशने वाला ४था ब्रह्म है + सृष्टिक्रम	⊕
6	06.mp3	44	⊕ भाग १	**अध्यात्म रामायण-प्रथम सर्ग-राम हृदय** :: हनुमानजी का भगवान राम से उनके निनि०स्वरूप को बताने की प्रार्थना, सीताजी द्वारा राम का निनि०स्वरूप निरूपण :: 'रामं विद्धि परम् ब्रह्म सच्चिदानंद अद्वयं'... हमारा स्वरूप भी जीवात्मा के रूप में सच्चि०ही है	⊕
7	07.mp3	33	⊕ भाग २	**अध्यात्म रामायण-प्रथम सर्ग-राम हृदय** :: हनुमानजी का भगवान राम से उनके निनि०स्वरूप को बताने की प्रार्थना, सीताजी द्वारा राम का निनि०स्वरूप निरूपण :: 'रामं विद्धि परम् ब्रह्म सच्चिदानंद अद्वयं'... 'अस्ति भाति प्रियं रूपं नाम चेत्यंश पंचकम्'....	⊕
8	08.mp3	42	⊕ भाग ३	**अध्यात्म रामायण-प्रथम सर्ग-राम हृदय** :: **राम का निनि०स्वरूप निरूपण ::** संसार के सब नाम-रूप उपाधि हैं व राम उपहित हैं, राम देहों के भीतर जीवात्मा एवं बाहर भी परिपूर्ण परमात्मा हैं, राम अखण्ड व्यापक अगोचर निरंजन निर्विकार निर्मल व सब जीवों का अपना स्वरूप यानि अपनी आत्मा हैं, वे स्वयं प्रकाश व सभी प्रकाशों के प्रकाशक हैं । **सीता का स्वरूप ::** मैं राम की महामाया शक्ति मूलप्रकृति हूँ, मैं राम की प्रेरणा से अनंतकोटि ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति पालन संहार क्षण मात्र में कर देती हूँ ।	⊕
9	09.mp3	46	⊕ भाग ४	**सीताजी द्वारा राम का निनि०स्वरूप निरूपण ::**हे हनुमान राम का निनि०स्वरूप सच्चिदानंद व्यापक अविकारी सब जीवों की आत्मा हैं। राम सभी शरीरों के भीतर बैठकर देखने वाले **जीवात्मा** व बाहर परिपूर्ण **परमात्मा** हैं तथा घटाकाश-महाकाश की भाँति अखंड हैं। **'तत्त्वमसि'**-हे जीव वही तेरा भी स्वरूप है। फिर सीताजी ने अपना स्वरूप वर्णन किया :: **सहस्त्रमुख रावण की कथा**	⊕
10	10.mp3	36	⊕ माण्डूक्य भाग १	**मुक्तिकोपनिषद** :: हे हनुमान मेरा वास्तविक सच्चिदानंद स्वरूप वेदान्त से जाना जाता है अतः तुम वेदांत का आश्रय लो, मुझ ईश्वर की निःस्वास रूप वेद हैं व जैसे तिलों में तेल सर्वत्र रहता है वैसे ही वेदों में वेदान्त व्यापक है, ४ वेद हैं व उसकी ११८० शाखाऐं हैं । ऋग्वेद की २१, सामवेद की १०००, यजुर्वेद की १०६ व अथर्ववेद की ५० शाखाऐं हैं, इनमें **१०८ - ३२ - १०** मुख्य हैं । मुमुक्षु को मोक्ष देने हेतु एक माण्डूक्य उ० ही पर्याप्त है **अर्थ सहित शान्ति मंत्र एवं माण्डूक्य उपनिषद आरम्भ**	⊕
11	11.mp3	47	⊕ माण्डूक्य भाग २	हे हनुमान ये ओम अक्षर ही सारे विश्व विराट का रूप धर कर स्थित है, सारा विश्व ओंकार का ही विस्तार है, इनों काल भी ओंकार है व त्रिकालातीत भी ओंकार है निश्चय ही ये चराचर जगत ब्रह्म ही है । हमारा तुम्हारा आत्मा ही ब्रह्म है, ब्रह्म ही हमारा आत्मा है। ये आत्मा ४ चरण वाला है, **प्रथम द्वितीय व तृतीय चरण-संक्षिप्त निरूपण** एवं **गर्भोपनिषद** का सविस्तार वर्णन	⊕
12	12.mp3	40	⊕ माण्डूक्य भाग ३	हमारा तुम्हारा आत्मा ही ब्रह्म है, ब्रह्म ही हमारा आत्मा है । ये आत्मा ४ चरण वाला है, **प्रथम द्वितीय एवं तृतीय चरण का सविस्तार निरूपण**(*P.S. : Detailed account in Quotes & Notes*)	विशेष ⊕
13	13.mp3	46	⊕ माण्डूक्य भाग ४	निषेध मुख से श्रुति हमारे ४थे स्वरूप का वर्णन करती है यानिजा०स्व०सु० इनों अवस्थाओं से परे व इनों का प्रकाशक ही **आत्मा का ४था चरण** है । सत्-चिद्-आनंद से पूर्ण वह पुरुष ही ब्रह्म अथवा हमारी आत्मा है, न तो वह विश्व तैजस प्राज्ञ है, न वह 'प्रतिबिम्बरूप' ज्ञान है और न अज्ञान है । **वह अदृष्ट्य अव्यवहार्य अग्राह्य अलक्षण अचिन्त्य अव्यपदेश्य यानि वह वाणी का विषय नहीं है तथा एकात्म है अर्थात इनों काल में उसका अपना ज्ञान स्वयं ही प्रमाण है ।**	विशेष ⊕
14	14.mp3	44	⊕ माण्डूक्य भाग ५	**ओंकार की ४ मात्राओं का आत्मा के ४ चरणों से तुलना, एकत्व एवं महिमा ::** ओंकार का अमात्र स्वरूप ४था यानि ओंकार का लक्ष्यार्थ ब्रह्म, तुरीय या हमारा आत्मा है, वह अद्वितीय अव्यवहार्य प्रपंचरहित शिवस्वरूप ही हमारा वास्तविक स्वरूप है। इस प्रकार संपूर्ण स्वरूप ओंकार ही हमारी आत्मा है। ओंकार ३ मात्राओं से जगत व अमात्ररूप से ब्रह्म/हमारी आत्मा को बताता है। जो अपने ओंकार स्वरूप को सम्यक प्रकार से जान लेता है वह अपने द्वारा अपने में ही प्रवेश कर जाता है।	अति विशेष ⊕
15	15.mp3	54	⊕ ⊕	माया रूपी मेघ और जगत रूपी बरसात ही भगवान के दर्शन में जीव के बाधक हैं । भगवत दर्शन में बाधकतीन प्रतिबन्ध 'मल विक्षेप आवरण' हैं। 'कर्म उपासना ज्ञान' त्रिकाण्डमय वेद से ये बाधाऐं नाश को प्राप्त होती हैं ::: वेद विहित **कर्म** या धर्म, **विकर्म** एवं **अकर्म** का सम्यक वर्णन ::: अहिंसा आदि **दैविक सम्पदा निरूपण** ::: **स्कन्धोपनिषद** में भ० शंकर का षडानन् को ज्ञानोपदेश	
16	16.mp3	60	⊕ ⊕ ⊕	सृष्टि के आदि में मैं अकेला ही था, पुरुष से छाया की तरह इच्छा होने पर मैंने अपनी त्रिगुणात्मिका माया से ४ वर्णों की सृष्टि की अतः **चारों वर्णों का मैं ही माता पिता व धाता और पितामह भी हूँ।** मेरी प्राप्ति का साधन **ओंकार भी मैं हूँ।** ओंकार का विस्तार ही वेद है। ओंकार बीज व वेद वृक्ष है। **वेदों का मूल भी मैं ही हूँ।** एक बीज से अनेक वृक्ष उत्पन्न होते हैं। पीपल का प्रत्येक अंग पीपल ही है, एक भी मैं हूँ और अनेक भी मैं हूँ। अतः **बीजरूप भी मैं हूँ और वृक्षरूप भी मैं हूँ** इसलिये ज्ञानीजन संपूर्ण चराचर जगत को मेरा ही रूप देखते हैं। मैं प्रत्येक शरीर में जीवात्मा के रूप में विद्यमान हूँ। अतः कल्याण के लिये जीव को अपने सच्चिदानंद स्वरूप को जानना चाहिये ।	
17	17.mp3	43	⊕ ⊕	सृष्टि के आदि में मनुष्यों के श्रेय सुख के लिये मैंने **'कर्म उपासना ज्ञान'** तीन योग बताये हैं जिनसे भगवान की माया से उत्पन्न प्रतिबन्ध **'मल विक्षेप आवरण'** का निवारण हो जाता है । कर्मयोग का उल्लेख ::: **मंदालसा एवं नट का दृष्टान्त**	1
18	18.mp3	42	⊕ ⊕	भगवान को जानने का त्रिकाण्डमय वेद ही साधन है। 'कर्म-उपासना-ज्ञानकाण्ड' ३ क्रम कक्षाऐं हैं। ज्ञानकाण्ड अथवा **'वेदान्त'** यानि - वेदों का अंतिम निर्णय - ब्रह्म ज्ञान कराता है और ब्रह्म को जानने वाला ब्रह्म ही हो जाता है। कर्मकाण्ड निरूपण' :: माता पिता गुरु एवं अतिथि देवता के समान ही पूज्य हैं, भगवान राम ने मनुष्यों को वेद-मर्यादानुसार व्यवहार करने की शिक्षादेने के लिये ही मनुष्य रूप में अवतार लिया ।	2

19	19.mp3	60	⊕	⊕		दो सुख हैं, विषयसुख को **प्रेयसुख** कहते हैं जो प्रतीति मात्र है व नित्यसुख को **श्रेयसुख** कहते हैं, यह ब्रह्म या आत्मसुख है जिसका कभी नाश नहीं होता । भगवान कहते हैं कि श्रेयसुख के लिये मैंने कक्षाक्रम से त्रिकाण्डमय वेद **'कर्म उपासना ज्ञान'** कहा है । ब्रह्म प्राप्ति का रास्ता वेदमार्ग है जो ब्रह्म तक पहुँचता है । प्रथम कक्षा कर्मकाण्ड के बाद दूसरी कक्षा भक्ति है । **भक्ति साधन है**, उसके २ पुत्र हैं - ज्ञान और वैराग्न । भगवान के **ज्ञान** के पश्चात सारा संसार स्वप्नवत् दिखाई पड़ता है और दूसरा पुत्र **वैराग्य**उत्पन्न होता है तब केवल भगवान में ही अनुराग होता है । **साध्य प्राप्ति के उपरान्त साधन भी छूट जाता है ।**	3
20	20.mp3	47	⊕	⊕		भगवान को जानने का त्रिकाण्डमय वेद ही साधन है। 'कर्म-उपासना-ज्ञानकाण्ड' ३ क्रम कक्षाऐं हैं। कर्मयोग शिक्षा :: भगवान राम ने मनुष्यों को वेद-मर्यादानुसार व्यवहार की शिक्षा देने के लिये ही मानुष अवतार लिया और माता पिता बन्धु सखा गुरु के साथ मर्यादानुकूल व्यवहार करके दिखाया । एकपत्निव्रत, गृहस्थ धर्म का उपदेश एवं रामायण कथा । सीता हरणोपरान्त राम विरह का सविस्तार वर्णन । नारद मोह प्रसंग ।	4
21	21.mp3	50	⊕	⊕		भगवान को जानने का त्रिकाण्डमय वेद ही साधन है। साधु का **"कर्म उपासना ज्ञानयोग"** दूसरों को शिक्षा व सदुपयोग का तथा असाधु का दूसरों को कष्ट देने का हेतु होता है अतः सबको अपने धर्मानुकूल ही कर्म-भक्ति-ज्ञान का विधान है । राम ने भ० शंकर की आराधना और रामेश्वरं की स्थापना (भक्तियोग)कर लंका पर विजय का वरदान प्राप्त किया इसके विपरीत रावण ने दुराग्रह से भ० शंकर से वर माँगा । साधु सधर्म कर्म-भक्ति-ज्ञानयोग से कल्याण को प्राप्त होते हैं व असाधु इनके दुरुपयोग से विनाश को ।	5
22	22.mp3	47	⊕	⊕		**भगवान राम का उपदेश ::** मेरी आज्ञा मानने वाला ही मुझे प्यारा व मेरा भक्त है । देवताओं को भी दुर्लभ मनुष्य शरीर सर्वश्रेष्ठ है । भारत **'धर्मभूमि'** होने के कारण पुण्यभूमि है इसीलिये भगवान के अवतार यहाँ ही हुए हैं । मनुष्य को ही विज्ञानकोष युक्त बुद्धि प्राप्त है जिसके द्वारा वह अपने ब्रह्म स्वरूप को जानकर मोक्ष प्राप्त कर सकता है । मनुष्य देह पारस मणि के समान है ।	**
23	23.mp3	51	⊕	⊕		वेद के द्वारा गुरु ही भगवान का स्वरूप बतलाता है । कर्मकाण्ड :: वर्णाश्रम पदाधिकार के अनुसार किये गये विहितकर्म **'कर्म'** कहलाते हैं । **'सामान्य और विशेष'** दो प्रकार के कर्म हैं, सभी वर्णाश्रमपद के लिये **सामान्य धर्म ::** १ अहिंसा २ सत्यं ३ अस्तेय ४ ब्रह्मचर्य ५ अपरिग्रह ६ अक्रोध ७ गुरु शुश्रुषा ८ शौचं - तन की शुद्धि जल से, मन की सत्य से व बुद्धि की ज्ञान से ९ संतोष १० आर्जवं ११ अमानित्वं १२ अदम्भित्वं १३ आस्तिकत्वं	6
24	24.mp3	35	⊕	⊕		वेद में भगवान के २ स्वरूपों का निरूपण है १ **निनि०**-अद्वितीय व्यापक परमार्थतत्तव की अव्यवहारिक सत्ता है एवं २ **ससा०** की व्यवहारिक सत्ता है। लोक शिक्षा हेतु ससा० रूप में भगवान अनेक अवतार धारण करते हैं। वर्णाश्रमानुसार धर्मानुकूल कर्म व 'कर्म-उपासना-ज्ञान' का उपदेश देते हैं और भक्तों के इनों ताप हरते हैं। निनि०-ससा० भेद का रामायण में अग्नि का दृष्टान्त	7
25	25.mp3	34	⊕	⊕		कर्मकाण्ड :: वर्णाश्रमपद के अनुसार किये गये विहितकर्म **'कर्म'** कहलाते हैं । **'सामान्य और विशेष'** दो प्रकार के कर्म हैं, सभी वर्णाश्रमपद के लिये **सामान्य कर्म ::** अहिंसा सत्य अस्तेयब्रह्मचर्य अपरिग्रह शौचं संतोष आर्जवं अमानित्वं अदम्भित्वआस्तिकत्वं । वर्णाश्रमपद विशेष के विहितकर्म **विशेष कर्म** कहलाते हैं । दोनों के फिर २ प्रकार हैं, **'सकाम'** :: स्त्री पुत्र धन राज्य हेतु कर्म, **'निष्काम'** :: भगवत् प्राप्ति के लिये किये गये कर्म। भगवान सच्चिदानंद स्वरूप हैं जिसे पाकर जीव संसार से सदा के लिये मुक्त हो जाता है। भक्तों के ४ प्रकार१आर्त २अर्थार्थी ३जिज्ञासु ४ज्ञानी, पहले ३ उदार हैं पर ज्ञानी भक्त मुझे सर्वाधिक प्रिय हैं	8
26	26.mp3	42	⊕	⊕		भ०राम सच्चि०ब्रह्म हैं मनुष्यों को शिक्षा देने के लिये मनुष्य रूप में अवतार लिया। चारों वेद उनकी स्वाँस हैं पर लोक शिक्षा हेतु उन्होंने गुरु गृह जाकर शिक्षा ग्रहण की और वेदों के अनुसार आचरण करके दिखलाया । भगवान नट की भाँति वेदाज्ञानुसार ही अभिनय करते हैं परन्तु अपने ब्रह्म स्वरूप में ज्यों के त्यों ही स्थित रहते हैं । भ० राम ने पहले **'कर्म'** का अभिनय किया फिर **'भक्तियोग'** की शिक्षा रामेश्वरं की स्थापना करके दी तथा शबरी के माध्यम से **'नवधा भक्ति'** का उपदेश किया ।	9
27	27.mp3	41	⊕	⊕		'भक्तियोग' की शिक्षा हेतु शबरी के माध्यम से **'नवधा भक्ति'** का उपदेश । १ संतों का संग २ भगवत कथा :: संत मेरा स्वरूप एवं मेरी माया को बता देते हैं जिससे उन्हें माया नहीं व्यापती अतः भगवान के ज्ञान का साधन भगवान की कथा ही है । राजा परीक्षित के कल्याण हेतु नारदजी ने विरक्त दिगम्बर शुकदेव जी से प्रार्थना की और शुकदेवजी द्वारा भागवत के माध्यम से राजा परीक्षित को भगवत् तत्त्व का ज्ञान हो गया व राजा परीक्षित तद्रूप होकर मुक्त हो गये ।	10
28	28.mp3	53	⊕	⊕		**यजुर्वेद :: ब्रह्मोपनिषद ::** सृष्टिक्रम :: सच्चि० ब्रह्म - अव्यक्त नाम की भ० की शक्ति - समष्टि बुद्धिरूपी महत् तत्त्व/ हिरण्यगर्भ/ ब्रह्मा - अहं तत्त्व/मन - पंचतन्मात्राओं से **सूक्ष्मशरीर** (अन्तःकरण = ५ ज्ञानेन्द्रियों ५ कर्मेन्द्रियों ५ प्राण + मन + बुद्धि + अहंकार) - पंचीकृत पंचभूतों से **स्थूलशरीर** - अखिलं जगत । अपना स्वरूप अज्ञान ही **कारणशरीर** है । इन सबके भीतर रहने वाला जीव ही हमारा स्वरूप है । जीव तो ब्रह्म ही है जिसका जन्म मरण नहीं होता गर्भोपनिषद ।	